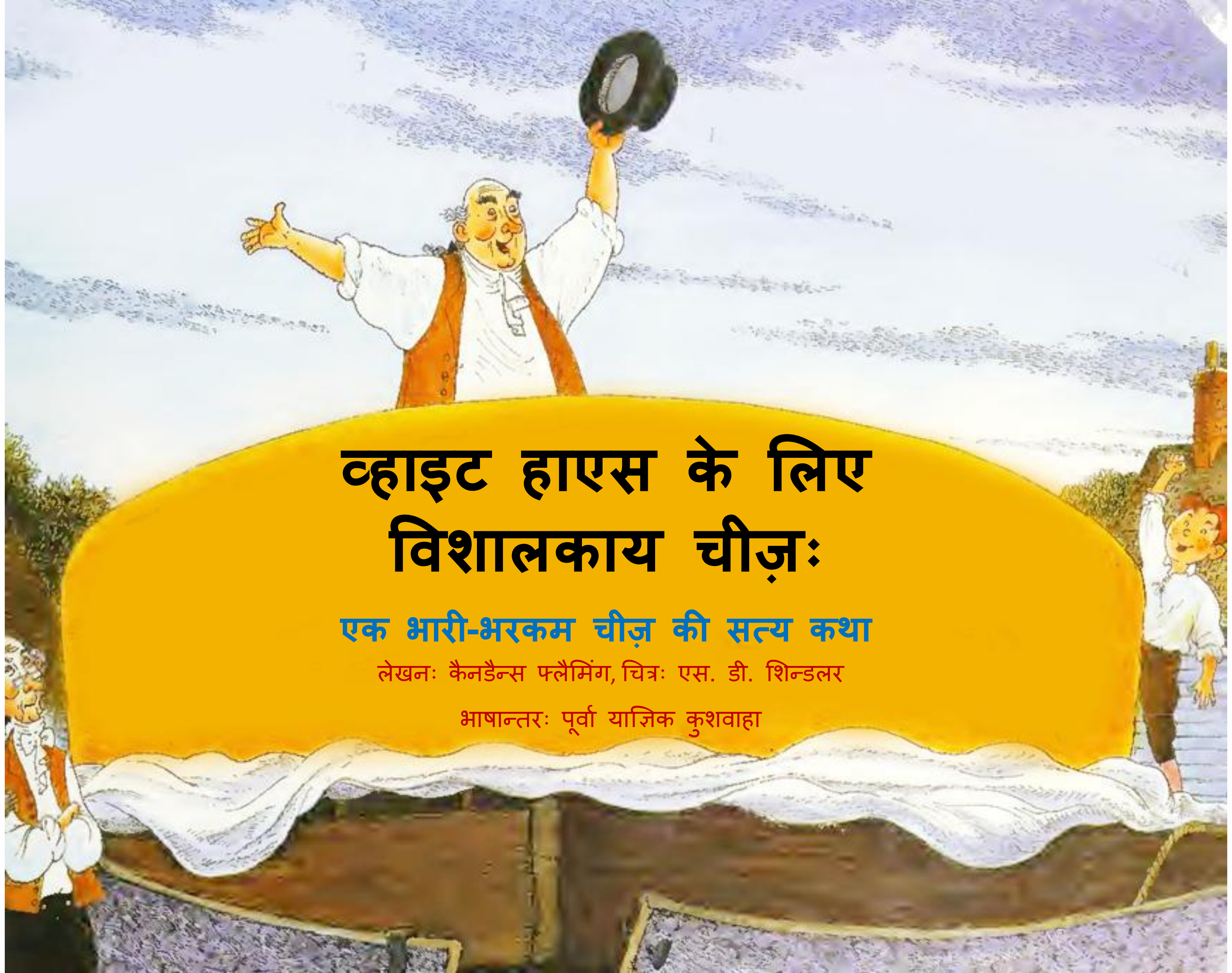


व्हाइट हाएस के लिए विशालकाय चीज़ः

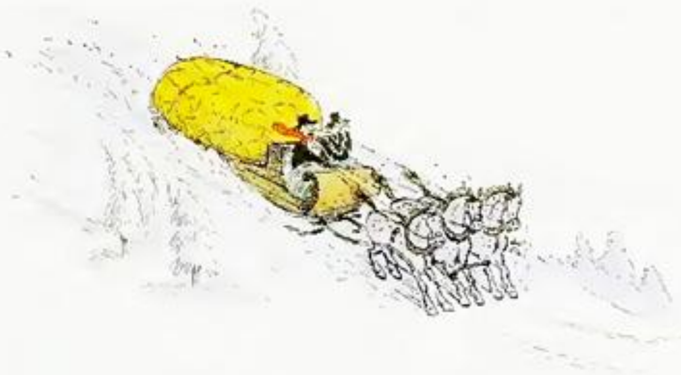
एक भारी-भरकम चीज़ की सत्य कथा

लेखनः कैनडैन्स फ्लैमिंग, चित्रः एस. डी. शिन्डलर

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

व्हाइट हाएस के लिए विशालकाय चीज़ः

एक भारी-भरकम चीज़ की सत्य कथा



लेखनः कैनडैन्स फ्लैमिंग

चित्रः एस. डी. शिन्डलर

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

मैलानी क्रूपा - एक असाधारण सम्पादक के लिए

इस कहानी के बारे में

हालांकि इस कहानी में जिन घटनाओं का ज़िक्र है वे बिलकुल सच्ची हैं, यह जान लें कि इसके पात्र असल में सच्चे नहीं हैं। गुडवाइफ टॉजर्स, किसान फज़लविट, किसान डर्डल्स, लिटिल हम्फरी क्रॉक और फिनिअस डॉब्स, सभी मेरी कल्पना की उपज हैं। कथा में मैंने 'व्हाइट हाउस' शब्द का उपयोग किया है, हालांकि उस इमारत को 1809 तक प्रेसिडेन्टस हाउस ही कहा जाता था।





मैसाच्युसैटस् के चैशायर कस्बे में ऐसी चीज़ बना करती थी जिसे देखते ही लोगों के मुँह में पानी आ जाता था। चीज़ के बड़े चक्के! चीज़ के तिकोन! चीज़ के डले! चैशायर चीज़ को बड़े प्यार से प्रसंस्कृत किया जाता था और तब उसे आदर्श स्थिति तक पहुँचाने के लिए उसे पुराना किया जाता था। हाल यह था कि फिलैडैल्फिया से लेकर बॉस्टन तक के लोग इसे जहाज़ भर खरीदने को तैयार रहते थे।

''जीईईहाँआँआँ!'' चैशायर के बाशिन्दे अक्सर शान बघारते। ''यह चैशायर चीज़ है, आपकी मेज़ पर परोसने के लिए सबसे उम्दा।'' पर जुलाई की एक शाम चैशायर कस्बे वालों ने ऐसी ख़बर सुनी, जिससे उनका दही हमेशा के लिए खट्टा कर दे!

"मैंने सुना है कि नॉर्टन, कैनेटिकट के लोग अपनी चीज़ में हरा और नीला रंग मिला रहे हैं," किसान फज़लविट ने चैशायर कस्बे में हो रही बैठक में बताया।

"और मैंने सुना है कि वे अपने दही में ही करौंदा और गुड़ का स्वाद मिला रहे हैं," किसान डर्डल्स ने जोड़ा।

"पर यही सबसे बुरी ख़बर नहीं है," गुडवाइफ टॉजर्स ने दुखी आवाज़ में कहा। और तब उसने जो कहा उससे उसके साथी बाशिन्दे चीख ही पड़े। "मैंने तो सुना है कि राष्ट्रपति थॉमस जैफरसन खुद देश की राजधानी में नॉर्टन की चीज़ परोस रहे हैं।"



इस हो-हल्ले के बीच बुज़ुर्ग जॉन लीलैण्ड कमरे के सामने की ओर आए। "लोगों," वे चीखे, "मुझे एक ख़याल सूझा है। यह बड़ा भारी ख़याल है। अगर तुम सब अपनी हरेक गाय का एक दिन का दूध दो, तो उसे फाड़ कर, हम चैडर चीज़ का एक बड़ा भारी चक्का बना सकते हैं।

"पर हम उसका करेंगे क्या?" नन्हे हम्फरी क्राक ने पूछा।

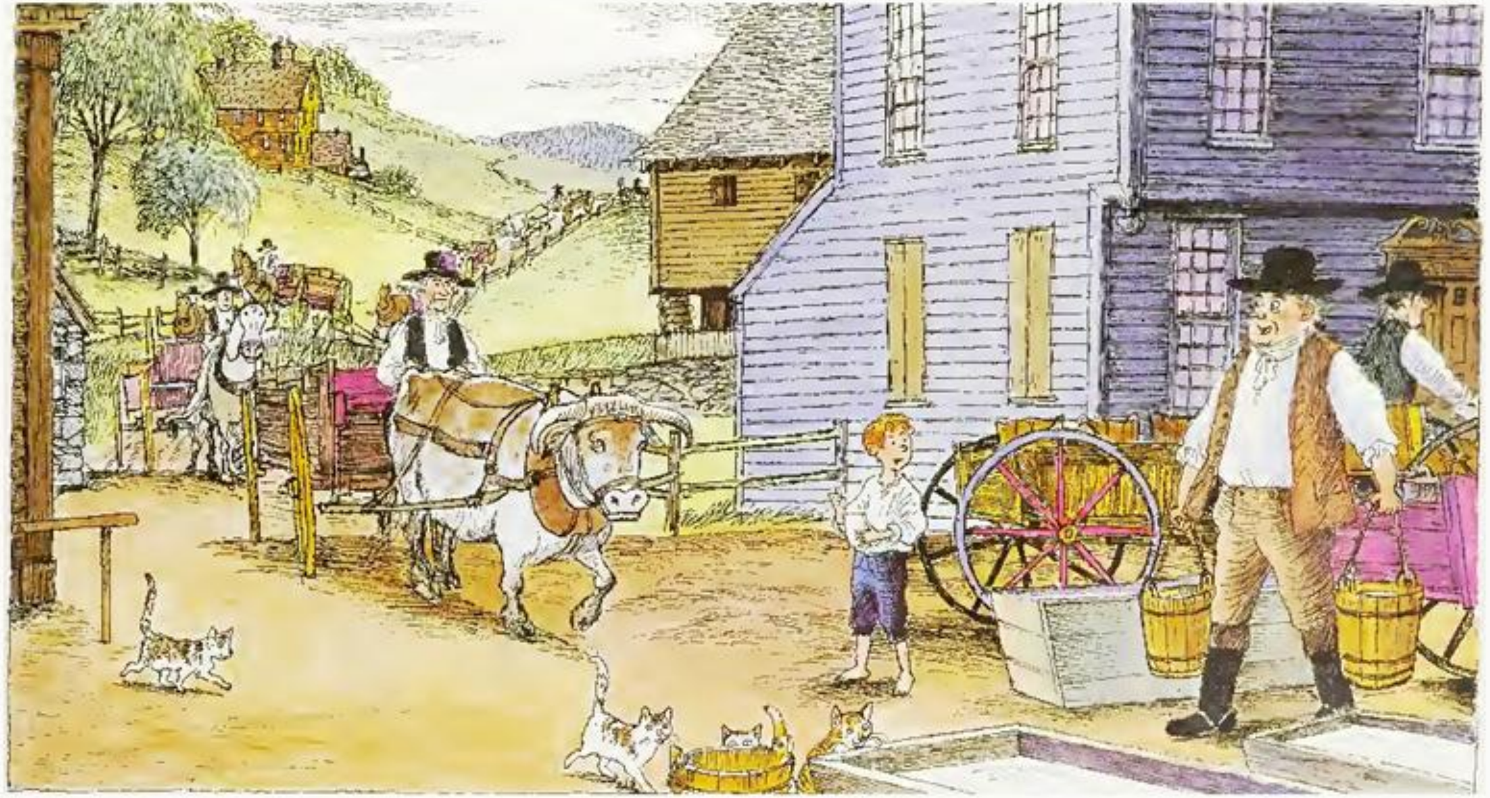
"हम उसे राष्ट्रपति जैफरसन को देंगे और क्या!" बुज़ुर्ग जॉन ने कहा। गुडवाइफ टॉजर्स ने तालियाँ बजाईं। "इतने बड़े चीज़ के बाद राष्ट्रपति सालों तक उसे ही परोसेंगे। मतलब वे नॉर्टन चीज़ को परोसने की बात ही भूल जाएंगे।"





कमरे के पीछे से नाक फकफकाने की आवाज़ आई। "एक दम बेतुकी बात है," फिनिअस डॉब्स ने मखौल उड़ाते कहा, "यह किया ही नहीं जा सकता।"

पर अगली सुबह मुर्गे बांग दे उसके पहले ही महाकाय चैडर का अभियान शुरु हो गया।



एक के बाद एक बैलगाड़ियाँ, कस्बे के चौराहे पर आती गईं। हरेक से दूध की धारा बही। इतना दूध कि वह गाय की बनाई नदी ही बन गई।

"हे भगवान!" बुज़ुर्ग जॉन अपनी बाल्टियों को नाँद में उलीचते चीखा। "यह तो कई सौ गायों का करिश्मा है।"

"पूरी नौ सौ चौंतीस गायों का," नन्हे हम्फरी क्राक ने कहा, जो गणित में अच्छा था।

दूध दुहा जा चुका था, सो सब कस्बे के सभागार में जमा हुए।

पुरुषों ने दूध गरम किया और साथ में चुटकुले सुनाए। औरतों ने दूघ फाड़ पनीर के थक्के काटे और गीत गाए। बच्चे हंसे-खिलखिलाए और पनीर पर नमक बुरका।





आखिरकार पनीर का पानी निकालने का समय आया।

“लगता नहीं कि तुम लोगों ने यह सोचा भी होगा कि इतने सारे पनीर का दबा कर पानी निकालने के लिए हमारे पास इतना बड़ा यंत्र तो है ही नहीं,” फिनिअस ने कहा।

बुज़ुर्ग जॉन और बाकी लोगों ने पनीर के पहाड़ को देखा, तब पनीर दबाने वाली छोटी-सी मशीन को।

“क्या हम लोग हाथों से दबा-दबा कर पानी नहीं निकाल सकते?” किसान फिज़लविट ने जानना चाहा।

“या फिर हम पानी निकालने के लिए पनीर को नंगे पैरों से नहीं दबा सकते? गुडवाइफ टॉजर्स ने सुझाया।

फिनिअस ने अपनी नाक फक-फकाई, “मैंने कहा था ना, कि यह हो ही नहीं सकता।”



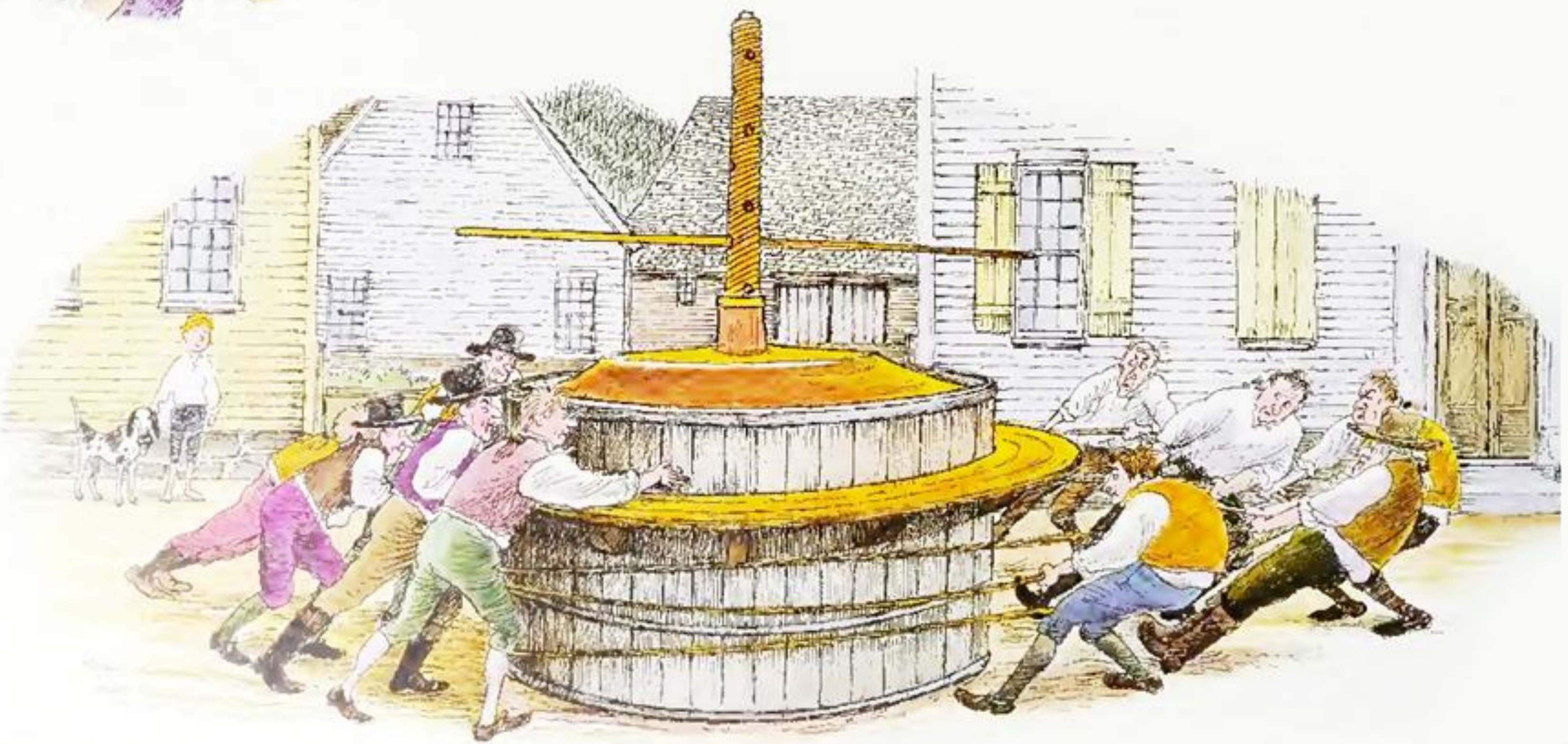
पर किसान डर्डल्स उछला। "अरे बिलकुल हो सकता है, पनीर का पानी निकालने वाला यंत्र बेशक छोटा है पर सेब का रस निकालने वाला कोल्हू तो छोटा नहीं है।

"सच कहते हो," बुज़ुर्ग जॉन ने कहा। "अगर इस कोल्हू से बागन भर के सेब का रस निकाला जा सकता है, तो इतने पनीर को दबा उसका पानी भी निकाला जा सकता है।"



कस्बे के पुरुषों की मदद से उस भारी-भरकम कोल्हू को घसीट कर चैराहे पर लाया गया।

सररर धम्म! की आवाज़ के साथ पानी अलग हो बह निकलाः सररर धम्म! सररर धम्म! सररर धम्म!



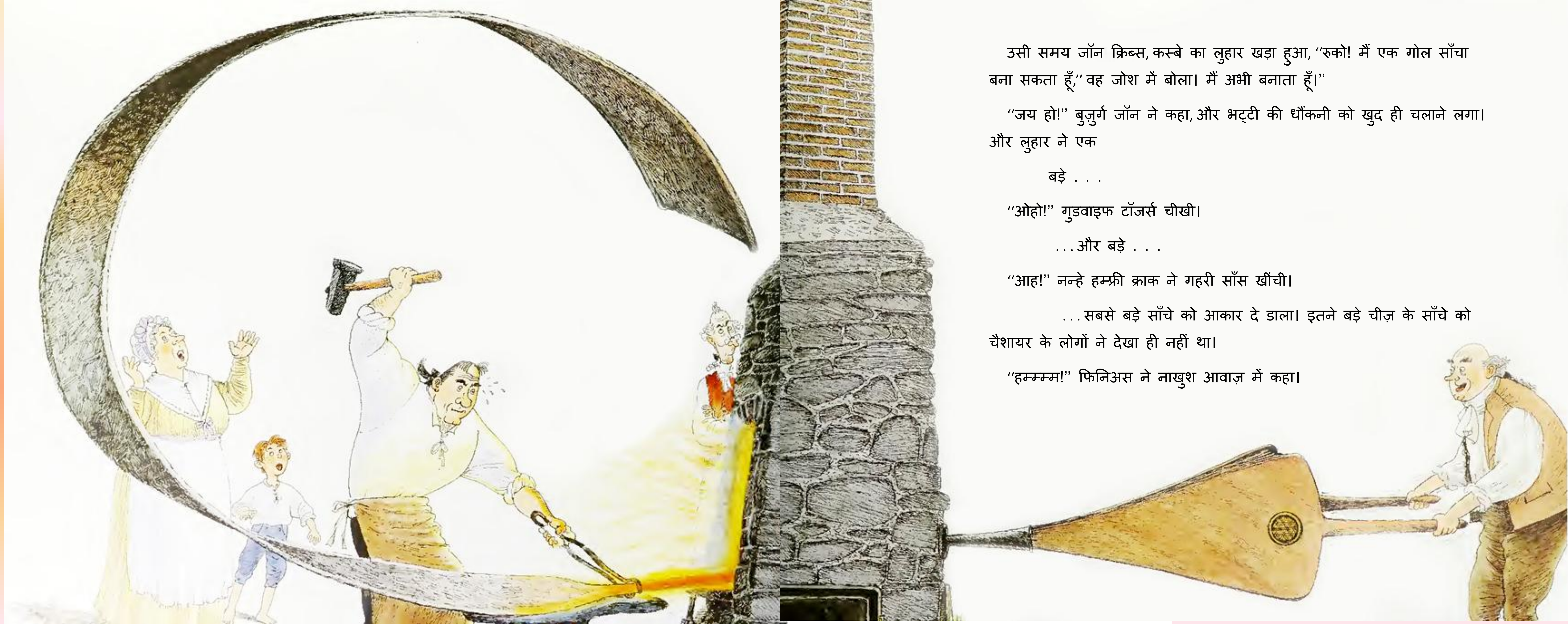




पूरी दोपहर पनीर अन्दर डाला जाता रहा। पर रात होने के पहले ही फिनिअस ने एक नई समस्या की ओर इशारा किया। "इतना बड़ा साँचा तो है ही नहीं जिसमें यह सारा पनीर रख उसे पुराना किया जाए और उसका चीज़ बनाया जाए।"

पूरा गाँव चुप हो गया।

"मैंने कहा था ना कि यह हो ही नहीं सकता!" फिनिअस बोल पड़ा।



उसी समय जॉन क्रिब्स, कस्बे का लुहार खड़ा हुआ, "रुको! मैं एक गोल साँचा बना सकता हूँ," वह जोश में बोला। मैं अभी बनाता हूँ।"

"जय हो!" बुज़ुर्ग जॉन ने कहा, और भट्टी की धौंकनी को खुद ही चलाने लगा। और लुहार ने एक

बड़े . . .

"ओहो!" गुडवाइफ टॉजर्स चीखी।

. . . और बड़े . . .

"आह!" नन्हे हम्फ्री क्राक ने गहरी साँस खींची।

. . . सबसे बड़े साँचे को आकार दे डाला। इतने बड़े चीज़ के साँचे को चैशायर के लोगों ने देखा ही नहीं था।

"हम्म्म्म!" फिनिअस ने नाखुश आवाज़ में कहा।

गाँव वालों ने जल्दी से साँचे में कपड़ा बिछाया और पानी निथारे हुए पनीर को उस गोल घेरे में भर दिया। जब तक यह सब खत्म हुआ सांझ हो चुकी थी। उन्होंने इस विशाल चक्के को पशुओं का वज़न तोलने वाले तराजू पर धरा।

''बहनों और भइयों,'' बुज़ुर्ग जॉन ने कहा, ''हमारी मेहनत से एक नायाब चीज़ बनी है। यह एक करिश्मा ही है। हमारी चैडर का वज़न है एक हज़ार दो सौ पैंतीस पाउण्ड! इसकी ऊँचाई साढ़े चार फीट की है और यह हमारे नन्हे हम्फरी क्रॉक से लम्बी है।''

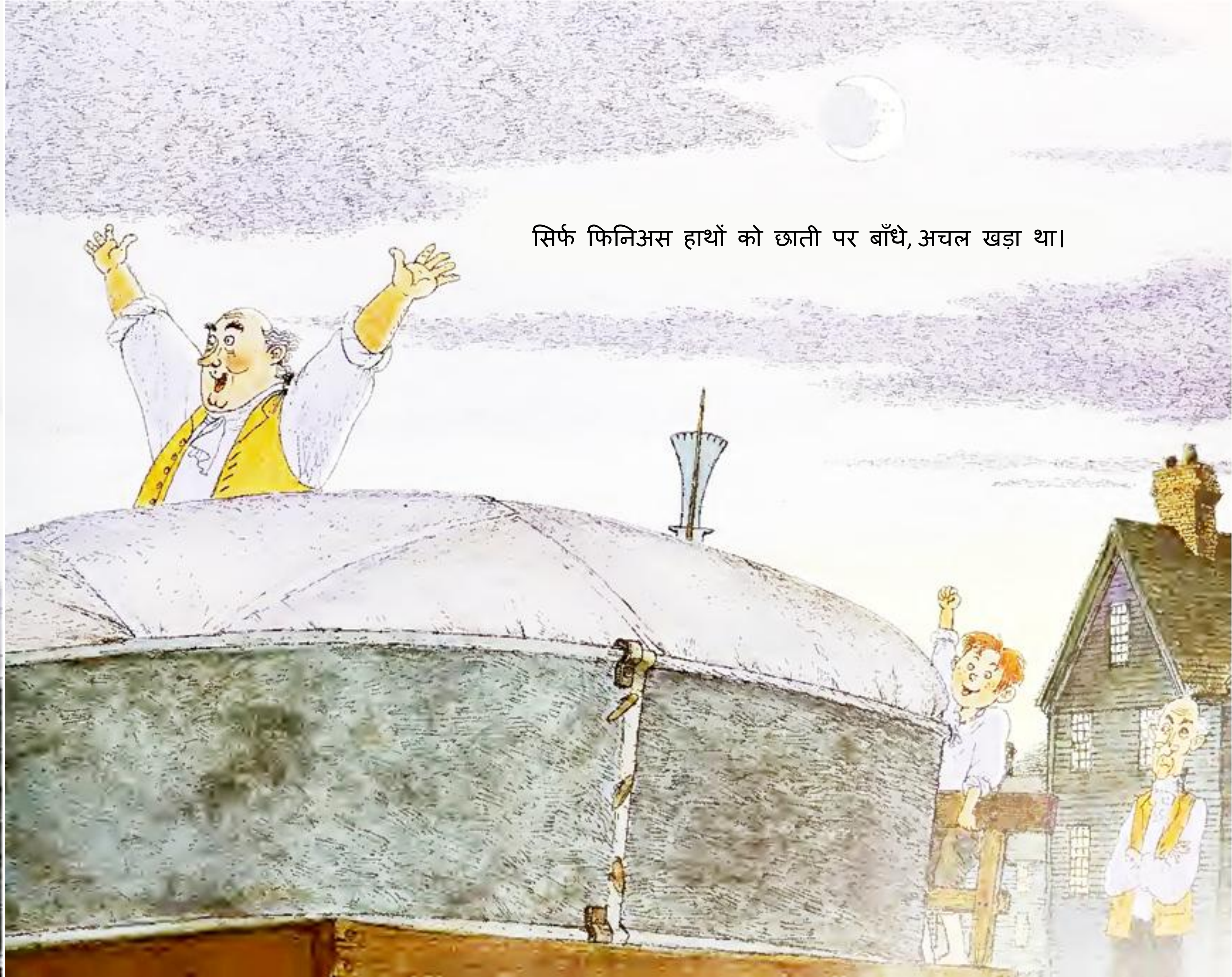


पुरुष खुशी से चीखे-चिल्लाए, और उन्होंने जोश में आ अपनी बीवियों को चूमा।

औरतों ने तालियाँ पीटी और एक चैड़ी मुस्कान उनके एक कान से दूसरे कान तक खिंच गई।

बच्चों ने गुलामाटियाँ खाईं और सड़कों पर नाचे!





सिर्फ फिनिअस हाथों को छाती पर बाँधे, अचल खड़ा था।

दूसरों ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया। उन्होंने एक बड़ी बैलगाड़ी पर किसी तरह चीज़ को लादा और उसे बुज़ुर्ग जॉन के कोठार में पुराना होने, समय के साथ तैयार होने . . .

. . . और तैयार होने

. . . और, और तैयार होने छोड़ दिया।

महीनों गुज़रते गए।





गाँव वाले बारी-बारी चीज़ को देखने जाते। वे हर दिन उसे उलटते-पलटते ताकि उसमें दरार न पड़े। वे उसके कतरे काट उसका स्वाद भी चखते।



आख़िरकार नवम्बर की एक सुबह गुडवाइफ टॉजर्स ने ऐलान किया, "स्वाद और बनावट में एकदम सही और बेहतरीन! यह चैशायर चीज़ है, आपकी मेज़ पर परोसी जाने के लिए सबसे उम्दा!"

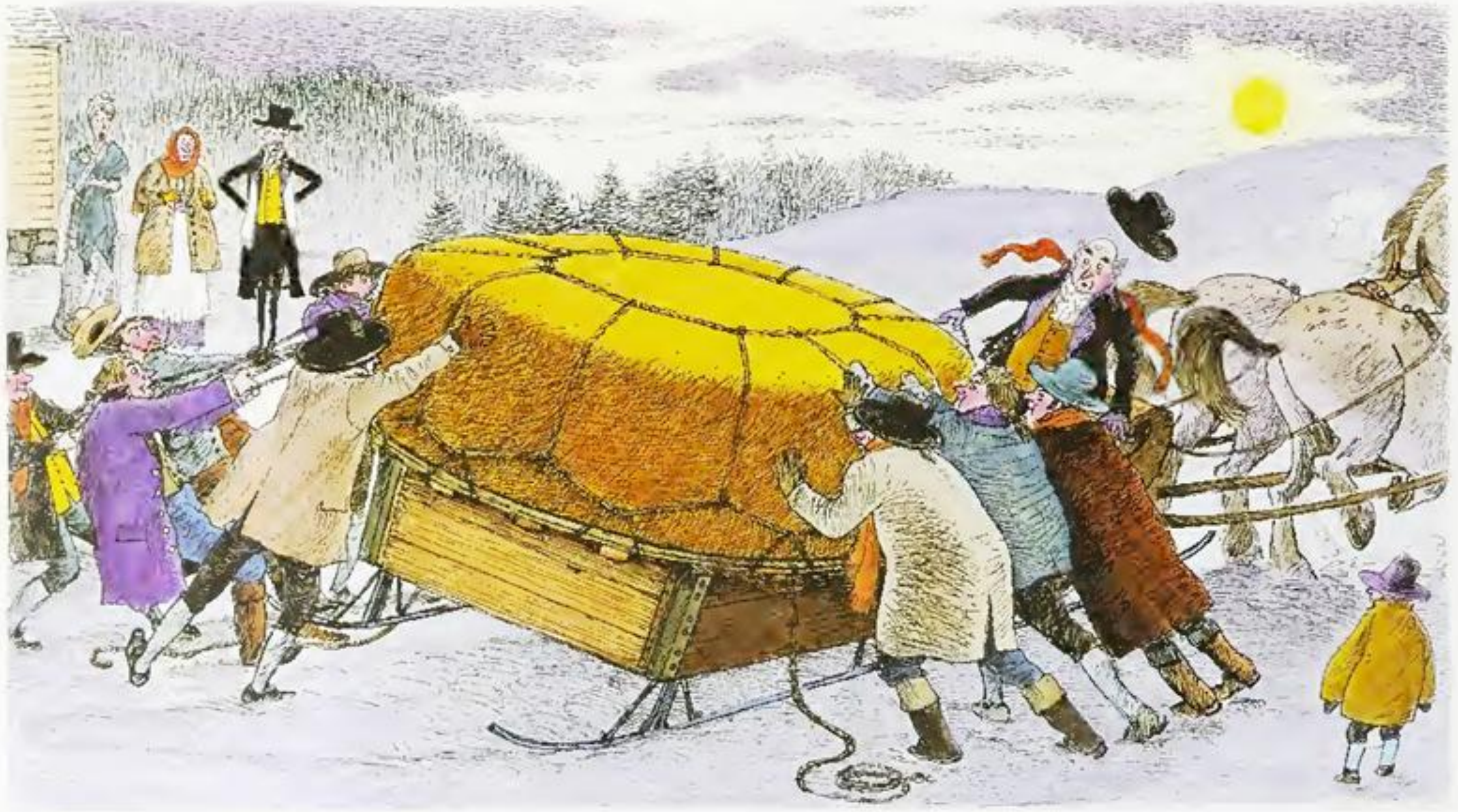
"हम्म्म्म!" फिनिअस ने नाक चढ़ कहा, "इसे राष्ट्रपति जैफरसन तक पहुँचाना भी तो है। मैं कहता हूँ यह हो ही नहीं जा सकता।"

"और मैं कहता हूँ हो सकता है," बुज़ुर्ग जॉन ने उत्साह से कहा। "मैं हमारी चीज़ को वॉशिंगटन डी. सी. ले जाऊँगा। और देश की सबसे बड़ी चीज़ को राष्ट्र के महानतम इन्सान, हमारे राष्ट्रपति को अपने कस्बे की तरफ से नए साल की भेंट के रूप में इसे दूंगा।"

"हम्म्म्म! हद दर्जे की बेवकूफी भरा ख़याल है," फिनिअस ने बहस करते कहा। "इस भारी-भरकम चीज़ को तुम अकेले इतनी दूर तक पहुँचा ही नहीं सकते।"

"सही कहते हो फिनिअस," बुज़ुर्ग जॉन ने कहा। "इसलिए तुम मेरे साथ चलोगे।"





अगली सुबह गाँव वालों ने चीज़ के विशाल चक्के को कोठार से निकाल बुज़ुर्ग जॉन की स्लेज पर रखा।

घोड़ा बिदका उसने लातें चलाई। स्लेज एक ओर झुक गई।

फिनिअस ने हमेशा की तरह नाक फकफकाई, "हम्म्म्म! मैंने कहा था ना कि यह हो ही नहीं सकता।"



पर बुज़ुर्ग जॉन ने स्लेज में एक और घोड़ा जोता और चाबुक फटकारते हुए सबसे विदा ली।





अगले पूरे दो दिनों तक बुज़ुर्ग जॉन, विशालकाय चीज़ और शंकालु फिनिअस बर्फ से भरी सड़कों पर लगातार बढ़ते रहे।





आख़िरकार वे न्यू यॉर्क आ पहुँचे।

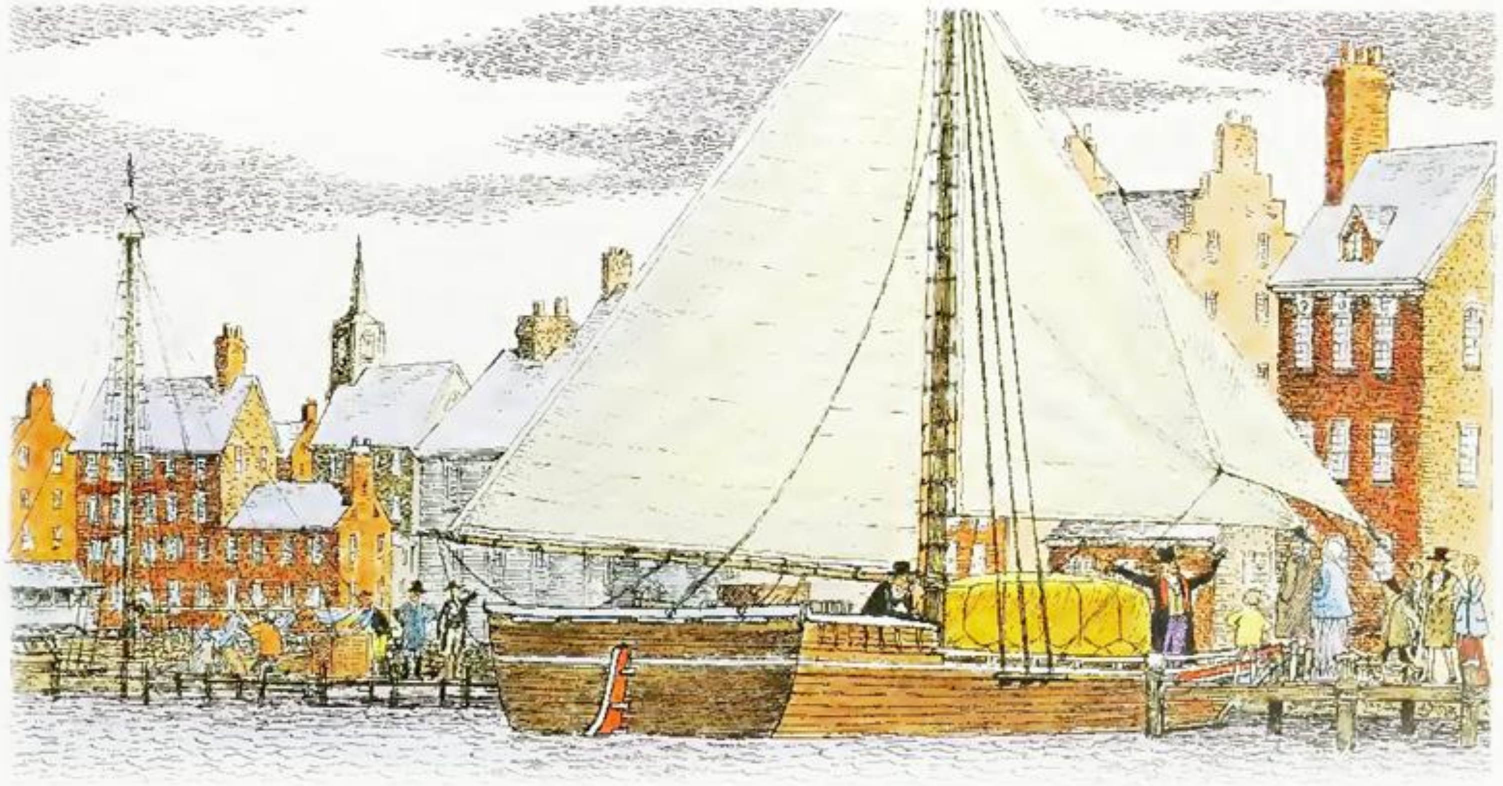




जहाज़ियों ने भारी-भरकम चीज़ को उठा जहाज़ के डेक पर रखा। और यों इन्सान और चैडर दोनों हडसन नदी में आगे बढ़ते गए।

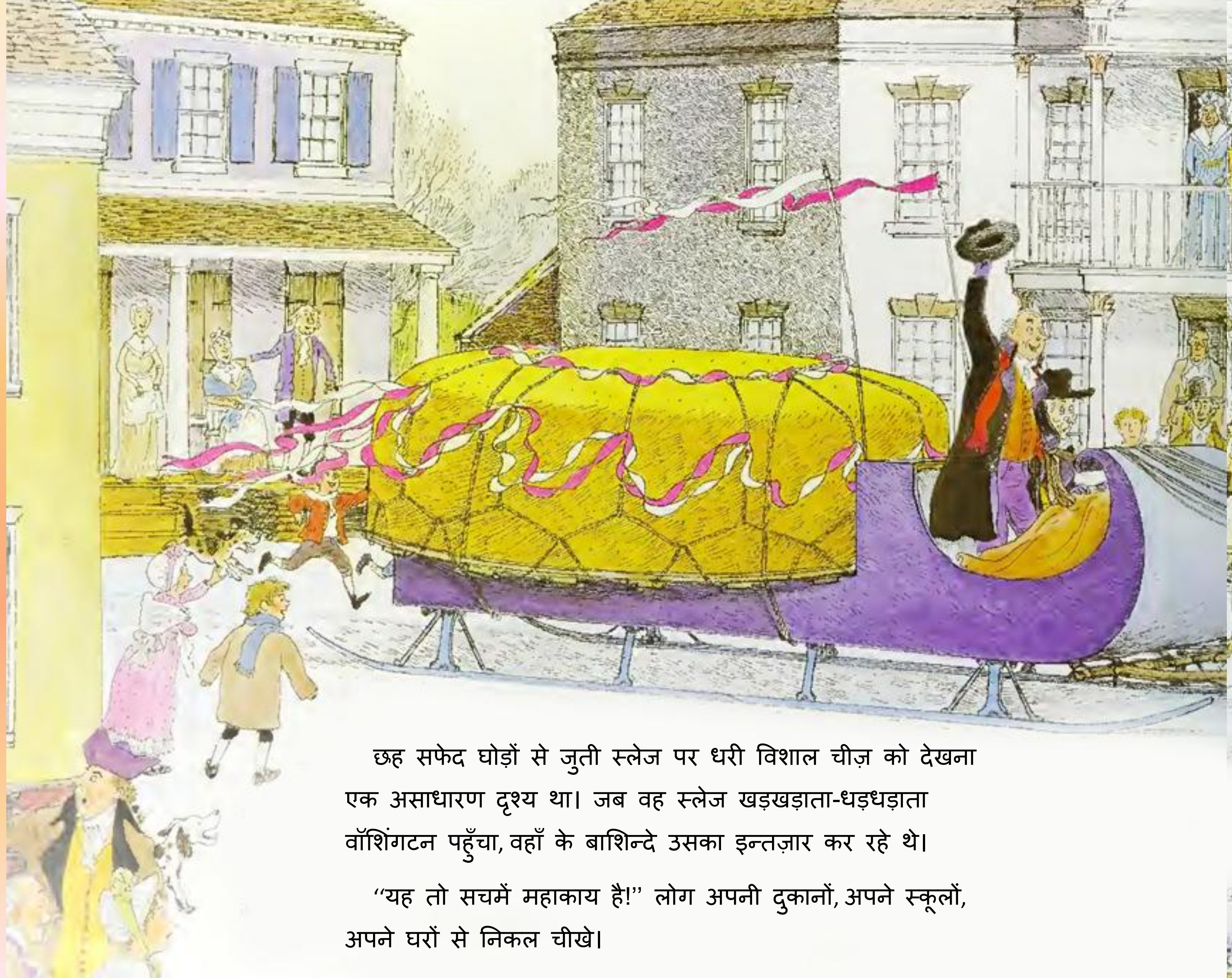
इधर चीज़ के आने की ख़बर जहाज़ के पहुँचने से पहले ही पहुँच चुकी थी। सो हर बन्दरगाह में लोग उसे देखने इकट्ठा मिलते।

“अरे यह तो भीमकाय है!” वे अचरज से चीखते। “यह अति विशाल है!” “यह तो प्रकांड है!” यह महाकाय है!”



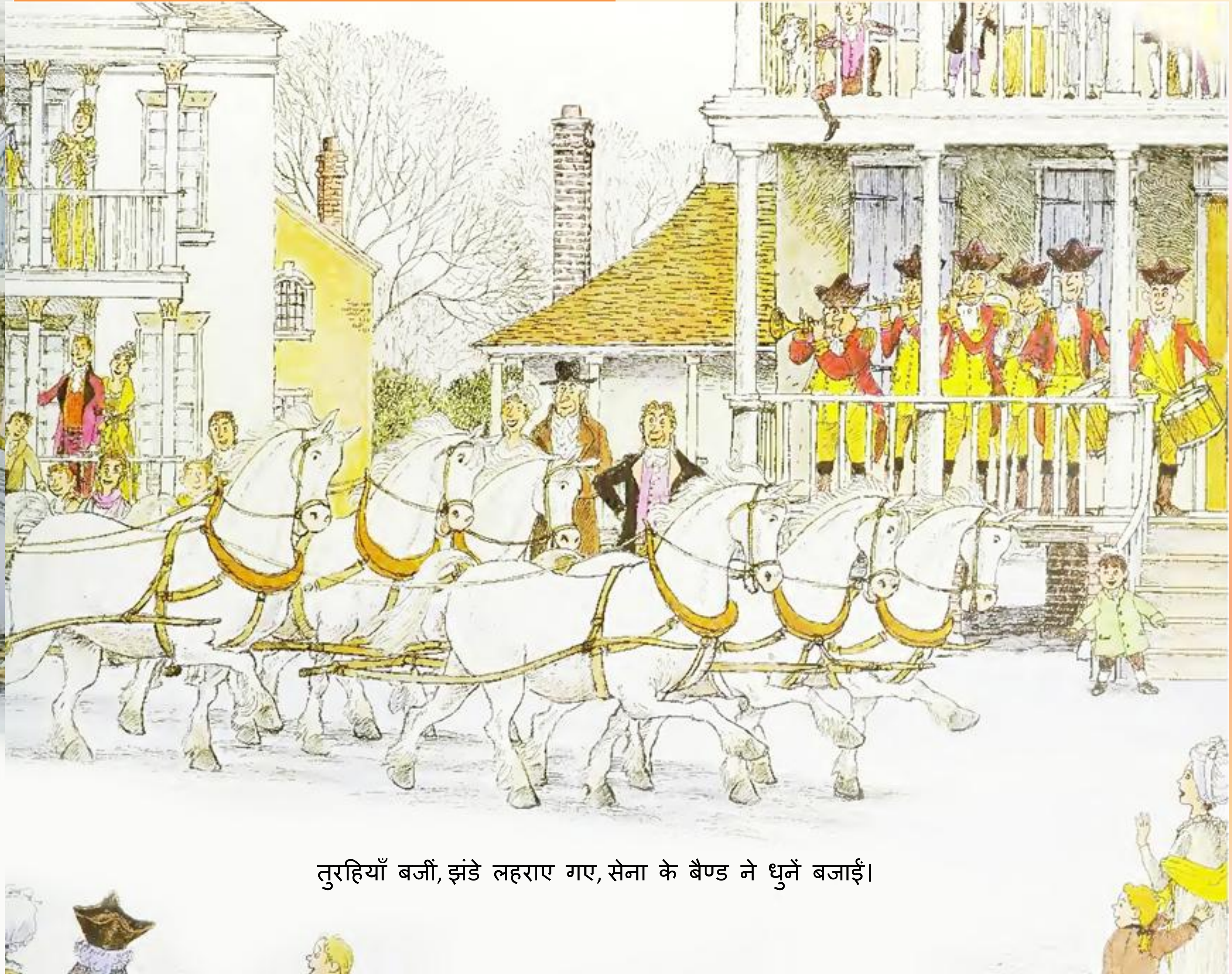
“यह चैशायर की चैडर चीज़ है!” बुज़ुर्ग जॉन इस सबका शान से एक ही जवाब देते। “आपकी मेज़ पर परोसी जाने के लिए सबसे उम्दा!”

अन्ततः जहाज़ न्यू यॉर्क सिटी पहुँचा। बुज़ुर्ग जॉन, फिनिअस और महाकाय चीज़ को उतारा गया, और वे अपने सफ़र के आख़िरी पड़ाव की ओर बढ़े।



छह सफेद घोड़ों से जुती स्लेज पर धरी विशाल चीज़ को देखना एक असाधारण दृश्य था। जब वह स्लेज खड़खड़ाता-धड़धड़ाता वॉशिंगटन पहुँचा, वहाँ के बाशिन्दे उसका इन्तज़ार कर रहे थे।

"यह तो सचमें महाकाय है!" लोग अपनी दुकानों, अपने स्कूलों, अपने घरों से निकल चीखे।



तुरहियाँ बजीं, झंडे लहराए गए, सेना के बैण्ड ने धुनें बजाईं।

बुज़ुर्ग जॉन ओर फिनिअस सीधे व्हाइट हाउस (राष्ट्रपति भवन) में राष्ट्रपति जैफरसन की नए साल की दावत में पहुँचे।

जब स्लेज राष्ट्रपति भवन के सामने रुकी, फिनिअस ने अपना गला ज़ोर से खंखारा। “तुम सोचते हो कि राष्ट्रपति जैफरसन जैसा इन्सान दो चीज़ बनाने-बेचने वालों और इस बड़ी चीज़ को अपनी दावत मे घुसने देंगे?”

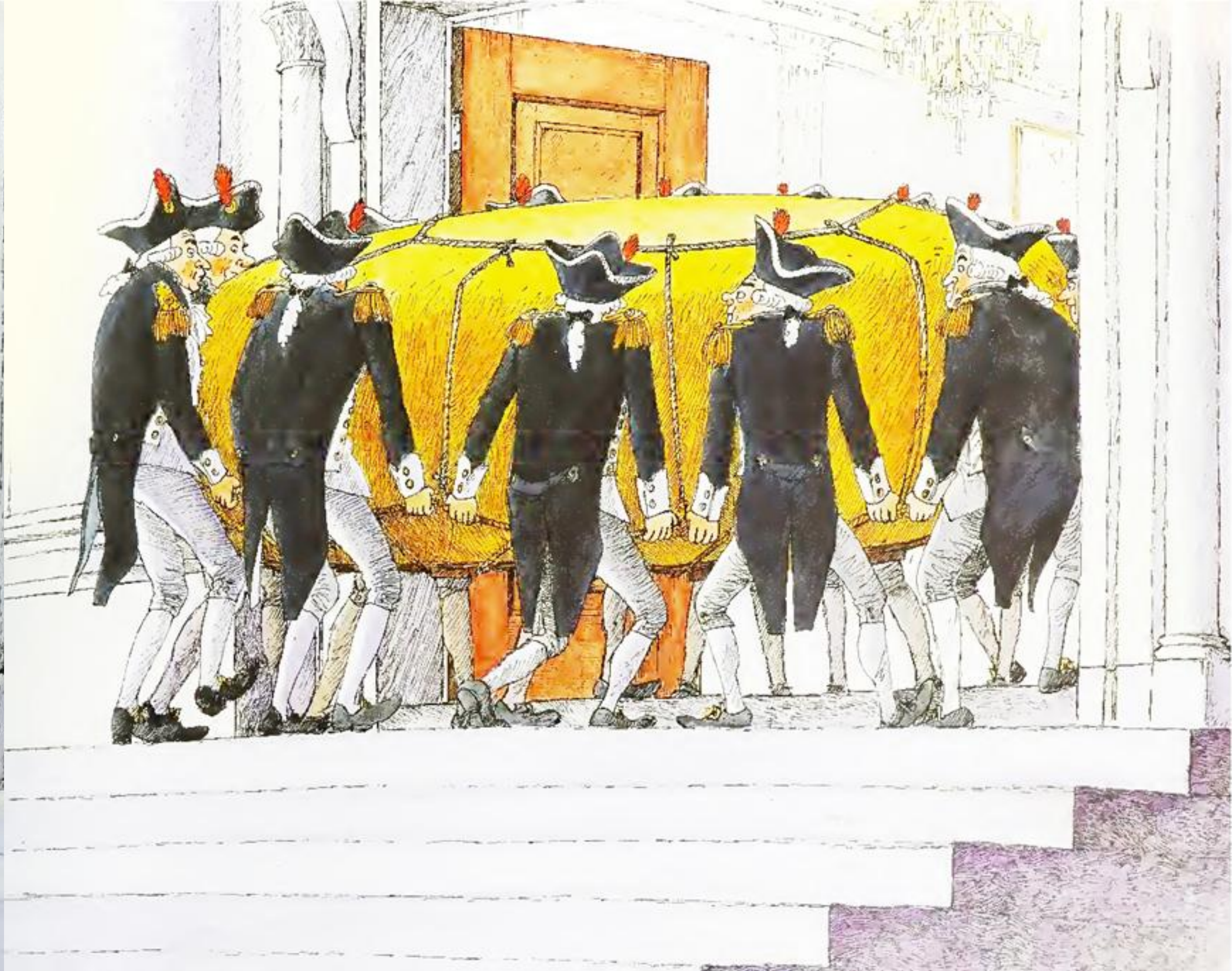
तभी द्वार खुला।

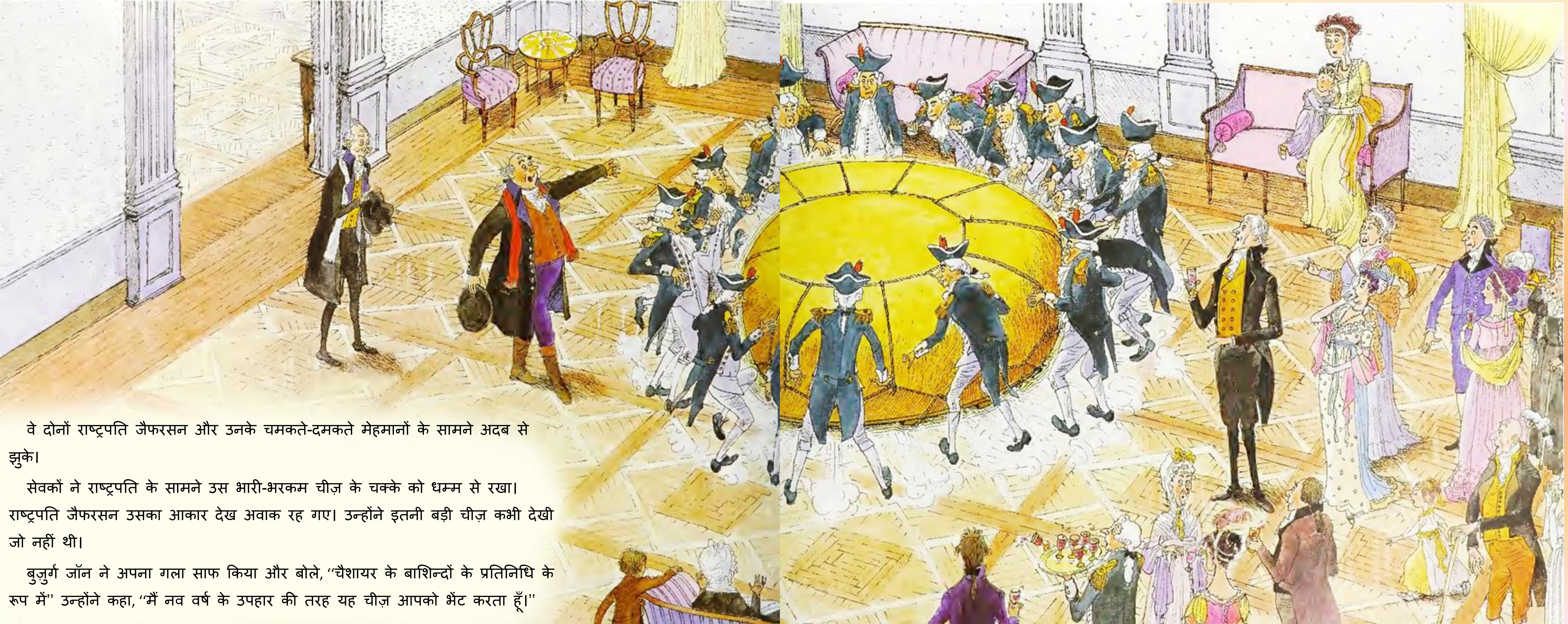
“अरे यह तो विशाल चीज़ है!“ एक द्वारपाल चिल्लाया। “राष्ट्रपति आप लोगों की राह देख रहे थे।”

तब पंद्रह सेवक आए और उन्होंने चीज़ को एहतियात से स्लेज से उतारा, और अन्दर ले चले।

बुज़ुर्ग जॉन ओर फिनिअस पीछे-पीछे चले।







वे दोनों राष्ट्रपति जैफरसन और उनके चमकते-दमकते मेहमानों के सामने अदब से झुके।

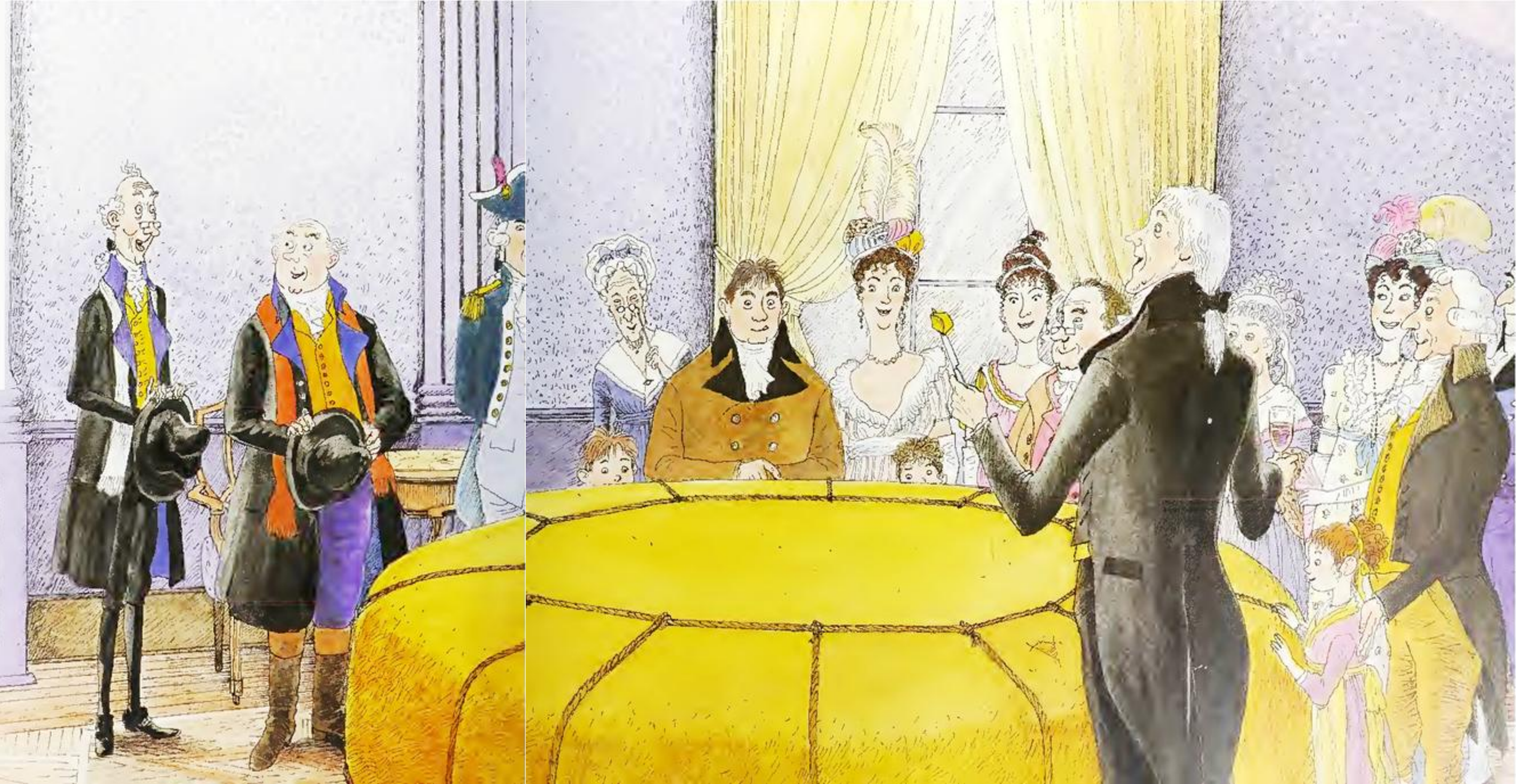
सेवकों ने राष्ट्रपति के सामने उस भारी-भरकम चीज़ के चक्के को धम्म से रखा। राष्ट्रपति जैफरसन उसका आकार देख अवाक रह गए। उन्होंने इतनी बड़ी चीज़ कभी देखी जो नहीं थी।

बुज़ुर्ग जॉन ने अपना गला साफ किया और बोले, "चैशायर के बाशिन्दों के प्रतिनिधि के रूप में" उन्होंने कहा, "मैं नव वर्ष के उपहार की तरह यह चीज़ आपको भेंट करता हूँ।"

"मैं आदेश देता हूँ कि यह घटना राष्ट्र के रिकॉर्ड में दर्ज की जाए," राष्ट्रपति ने घोषणा की। "इसका रिकॉर्ड हमेशा देश के अभिलेखागार में रहेगा।" तब उन्होंने चीज़ के सुनहरे चक्के में से एक टुकड़ा काटा।

सभी मेहमान चीज़ का स्वाद चखने आगे आए। ऐसी योजना देश में पहली बार जो बनाई गई थी। फिनिअस ने एक बार भी अपनी नाक नहीं फकफकाई। उसके चेहरे पर एक चौड़ी मुस्कान थी।

"यह चैशायर चीज़ है," उसने शान बघारते कहा, "आपकी मेज़ पर इससे बेहतर कुछ परोसा ही नहीं जा सकता!"





उस चीज़ के बारे में अंतिम शब्द

वह विशाल चीज़ बुज़ुर्ग जॉन के राजधानी से चैशायर लौट जाने के बाद भी बनी रही। इसे व्हाइट हाउस के पूर्वी कमरे में रख गया। राष्ट्रपति से मिलने आने वाले अनेक मेहमानों ने उसके टुकड़ों का मज़ा लिया। जिसने भी उसे चखा, लगभग सभी ने उसकी तारीफ़ की, उसे सबसे उम्दा बताया।

पर अफ़सोस की बात यह है कि अगले नए साल तक उस चक्के के बीच से तकरीबन साठ पाउण्ड चीज़ को हटाना पड़ा क्योंकि वह हिस्सा ख़राब हो गया था। इसके बावजूद बची हुई चीज़ व्हाइट हाउस की खाने की मेज़ की शोभा बढ़ाती रही। यहाँ तक कि 1803 में लूइसियाना को खरीदने के बाद आयोजित भोज में भी उसे परोसा गया।

एक स्त्रोत के अनुसार विशाल चीज़ 1805 में राष्ट्रपति भोज तक बनी रही थी, जिसमें उसे गर्म पंच और केक के साथ परोसा गया था। एक अफ़वाह यह भी है कि इस समय के बाद जितनी भी चीज़ बची रही उसे पोटोमैक नदी में फेंक दिया गया। पर एक तथ्य साफ़ है। जब तक राष्ट्रपति जैफरसन अपने पद पर बने रहे उन्हें अपनी मेज़ पर नॉर्टन की चीज़ परोसने की ज़रूरत नहीं पड़ी।

और चैशायर के लोग?

वे अपनी विशालकाय चीज़ को कभी नहीं भूले। 1940 में उन्होंने उस चीज़ और सेब का रस निकालने वाले कोल्हू की प्रतिकृति कांक्रीट में बनवाई। उसके नीचे लगे ताम्र-पत्र में बुज़ुर्ग जॉन लीलैण्ड की तस्वीर और ये शब्द खुदे हैंः

एल्डर जॉन लीलैण्ड 1754-1841

द बिग चैशायर चीज़

वेइंग 1235 पाउण्डस्